डेट फंड में मिलती है बेहतर विविधता

हर्षेन्दु बिंदल
प्रेसिडेंट, फ्रैंकलिन टैंपलटन
इन्वेस्टमेंट्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग लगभग 13 लाख करोड़ रुपये का है और इसमें फिक्स्ड इनकम अथवा डेट की 9 लाख करोड़ रुपये की मजबूत हिस्सेदारी है। शेष हिस्सा इक्विटी का है। डेट फंडों की हिस्सेदारी में बीते एक दशक से अधिक बदलाव नहीं आया है जब इसका आकार 2 लाख करोड़ रुपये से भी कम था। 2005 से लगभग 7 गुणा वृद्धि होने के बावजूद इसमें एक और प्रमुख चीज है, जिसमें कतई बदलाव नहीं आया है और वह है श्रेणी का संस्थागत प्रभुत्व (मुख्य रूप से कारपोरेट्स और बैंक)।

हालांकि, हमें अभी भी लंबा सफर तय करना है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़े बताते हैं कि लगभग 90 लाख करोड़ रुपये बैंक डिपॉजिट्स में लगे हुए हैं। यह डेट म्यूचुअल फंड में निवेशित धन का 10 गुणा है और रिटेल डेट एयूएम का 35 गुणा है। खुदरा निवेशकों की 'निश्चित लाभ' की

प्रवृत्ति के अलावा डेट फंडों द्वारा पेश किए जाने वाले लाभों को लेकर कम जागरूकता के कारण ऐसा है। यहां तक कि अधिकतर निवेशकों ने पहले ही उच्च ब्याज दरों के लिए खरीदारी की है और वे राष्ट्रीयकृत बैंकों से सहकारी बैंकों का रुख कर रहे हैं। यह सिर्फ समय की बात है और आने वाले समय में डेट फंडों को इसमें जोड़ा जा सकता है।

डेट म्यूचुअल फंडों के दो प्रमुख कारक हैं विविधता (वैरायटी) और सहूलियत। वैरायटी के लिहाज से डेट फंड निवेश सीमा और जोखिम उठाने की क्षमता में उपलब्ध होते हैं। इसके मुताबिक इन्हें अल्प कालिक और दीर्घकालिक डेट फंडों में वर्गीकृत किया जा सकता है। अल्पकालिक निवेश सीमा के लिए निवेशक द्वारा लिक्विड फंडों (3-6 महीने), अल्ट्रा शॉर्ट टर्म डेट फंडों (एक वर्ष से कम) और अल्प कालिक डेट फंडों (3 वर्ष से कम) में से चयन किया जा सकता है। आपकी निवेश सीमा यदि 3 वर्ष से अधिक है, तो आप इनकम और गिल्ट फंडों में से चुनाव कर सकते हैं। जोखिम के आधार पर आपको ब्याज दर जोखिम और क्रेडिट रिस्क पर विचार करना चाहिए। अर्थव्यवस्था में ब्याज दरों में बदलाव होता रहता है, क्योंकि बांड कीमतें और प्रतिपल (ब्याज दरें) विपरीत दिशा में बढ़ते हैं। इस जोखिम का पता पोर्टफोलियो होल्डिंग्स की औसत अवधि से लगाया जा सकता है। जितनी लंबी अवधि होगी, उतना ही अधिक ब्याज दर जोखिम होगा। लिक्विड फंडों में ब्याज दरों में सबसे कम जोखिम होता है, बल्कि गिल्ट फंडों में ब्याज दर जोखिम सर्वाधिक होता है। क्रेडिट रिस्क के लिहाज से (ब्याज और मूल के भुगतान में डिफाल्ट अथवा विलंब होने का खतरा), गिल्ट फंडों में कोई क्रेडिट रिस्क नहीं होता, क्योंकि इसमें सोवरेन बांड्स होते हैं। अन्य सभी फंडों में क्रेडिट रिस्क पोर्टफोलियो में बांडों की ऋण साख पर निर्भर करती है।